हिंदी अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी संभावनाएं और सीमाएं

डॉ. रितु गुप्ता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
जी.एम.एन. कॉलेज (पी.जी.) कॉलेज, अम्बाला छावनी

शोध सारांश

राष्ट्र और राष्ट्र भाषा के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका महत्वपूर्ण है। सूचना प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को एक नया आयाम दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी देश के विकास की सीढ़ी ही नहीं लिफ्ट है, देश को विकास की धारा से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है क्योंकि पलक झपकते हर पल की खबर इस माध्यम से प्राप्त हो जाती है। आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जो इससे अछूता हो। हमारी पौराणिक कहानियों में पात्रों के पास जो शक्तियां तपोबल से प्राप्त या चमत्कारों से प्राप्त होती थी, अब सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा महज कुछ शिक्षा से प्राप्त हो जाती हैं।कंप्यूटर तो मानों इंटरनेट से जुड़ कर महाभारत का संजय हो गया है जो हर रणभूमि की खबर सामने रख देता है। शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने में सूचना एवं संचार तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। शिक्षार्थियों में रूचि बढ़ाना, अभिप्रेरित करना, अधिगम करना, अधिगम और प्रशिक्षण देना, अनुकूल शैक्षिक वातावरण, विभिन्न शक्तियों का विकास आदि के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी महत्वपूर्ण एवं उपयुक्त है। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण आज संपूर्ण विश्व एक ग्राम बन गया है। अपने शोध को सर्वथा वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक तथा प्रासंगिक और उपयुक्त बनाने के लिए शोध की प्रक्रिया और नवीन विषय पर विचार करना नितांत आवश्यक है। हिंदी अनुसंधान के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी ने अत्यंत महत्वपूर्ण पहल करके कई संभावनाएं जगाई हैं और आने वाले समय में इस विषय में और भी उपलब्धियां हासिल होंगी।

बीज शब्द: सूचना प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, अनुशीलन, समीक्षा, समुन्नति, संरक्षण, मर्यादित, उद्यमिता, ज्ञान, संगणक, पुनरावृति।

गणतंत्र भारत में शिक्षा, शोध, समुन्नति और सूचना प्रौद्योगिकी की क्या स्थिति है, क्या होनी चाहिए? इस पर विचार करते हुए यह देखते हैं कि सूचना प्रौद्योगिकी ने जहां विज्ञान के विषयों को नई संभावनाएं प्रदान की है वहां मानविकी विषयों को भी न्यूनाधिक प्रभावित किया है। क्या अर्थविज्ञान, क्या राजनीति विज्ञान, क्या समाजशास्त्र और क्या भाषा और मानविकी, सभी ज्ञानानुशासन सूचना-प्रौद्योगिकी से न्यूनाकि लाभान्वित हुए हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी ने असीम संभावनाएं और सफलताएं प्रदान की हैं। एक क्लिक पर ढेर सारी जानकारियां हमारे सामने उपस्थित हो जाती है और हम संदर्भ, प्रसंग तथा आवश्यकता के अनुसार उसका लाभ उठाते हैं। विभिन्न ज्ञानानुशासनों में हो रहे शोध कार्य में तो सूचना प्रौद्योगिकी ने निःसंदेह नए क्षितिज खोले ही हैं, हिंदी अनुसंधान भी इससे अछूता नहीं रहा है। हिंदी अनुसंधान में सूचना-प्रौद्योगिकी के प्रयोग और संभावनाओं पर चर्चा करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि हिंदी अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी के सामान्य और अवधारक अर्थ क्या है? इनका प्रयोग किन अर्थों में किया जाता है।

अनुसुधान शब्द के कई पर्याय हिंदी में उपलब्ध हो जाते हैं यथा - अन्वेषण, अनुशीलन, परिशीलन, समीक्षा, शोध, गवेषणा, परिशीलन...। शोध शब्द अनुसंधान के अत्यंत निकट माना जाता है। शोध या अनुसंधान से तात्पर्य है अज्ञात को ज्ञात बनाना और उसकी वास्तविकतों सहित विश्लेषित करके नए पन के साथ पुनः प्रस्तुत करना। डॉ. तिलक सिंह के अनुसार, ''अनुसंधान के क्षेत्र में अज्ञात तथा विस्मृत तथ्यों को सर्वग्राह बनाना और ज्ञात तथ्यों को नवीन दृष्टि से संदेह रहित तथा निभ्रांत बनाना शोध कहलाता है।1 स्पष्ट है कि शोध या अनुसंधान मानव की जिज्ञासाओं को तृप्ति के समाधान की सहज प्रवृत्ति है और यह मानव को उन्नत करती हुई सभ्यता/संस्कृति के स्वरूप को भी निखारती है। अनुसंधान एक कला है जिसके अंतर्गत ज्ञान के ज्ञात-अज्ञात तथ्यों की खोज और उनका विश्लेषण करके सिद्धातों का निर्धारण किया जाता है। शोध

ISBN: 978-81-954645-0-0

करने के लिए सबसे पहले किसी समस्या या प्रश्न की आवश्यकता होती है। हमारे सामने कोई समस्या या प्रश्न होता है जिसके समाधान के लिए हम शोध की दिशा में आगे बढ़ते हैं। इसके लिए शोधार्थी में जिज्ञासा की प्रवृत्ति का होना आवश्यक है। किसी विशेष ज्ञान क्षेत्र में शोध समस्या का समाधान या जिज्ञासा की पूर्ति में किया गया कार्य उस विशेष ज्ञान क्षेत्र का विस्तार करता है। इसके साथ ही शोध से नये-नये शैक्षिक अनुशासनों का उद्‌भव होता है जो अपने विषय क्षेत्र की विशेषता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अनुसंधान के अर्थ से भिन्न होकर अब सूचना प्रौद्योगिकी के अर्थ को जानना भी अपेक्षित है। सूचना प्रौद्योगिकी के लिए अंग्रेजी में इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी शब्द चलता है। सूचना प्रौद्योगिकी के अर्थ को स्पष्ट करते हुए श्री एन.सी. पंत लिखते हैं ''यद्यपि सूचना की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। सूचना शब्द कई तरह के समाचारों के आदान-प्रदान के लिए प्रयोग में आता है। सूचना का वास्तविक संबंध ज्ञान के किसी स्त्रोत को किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाना है जिसे उस ज्ञान की जानकारी पहले ना रही हो, किसी घटना विशेष की संपूर्ण या आंशिक जानकारी किसी व्यक्ति या समाज या पूरे मानवीय समाज को देना सूचना कहलाता है।2 वस्तुत: सूचना प्रौद्योगिकी ने संपूर्ण विश्व को एक ग्राम बना दिया है। एक कुंजी भर दबाने पर वांछित जानकारी उपलब्ध हो रही है। सूचना क्रांति से समाज के संपूर्ण कार्यक्रम प्रभावित हुए हैं - वह धर्म हो या शिक्षा, स्वास्थ्य हो, व्यापार हो, प्रशासन, सरकार हो या उद्योग, अनुसंधान हो या प्रचार-प्रसार सभी क्षेत्रों में कायापलट हो चुका है। आज का समाज सूचना समाज कहलाने लगा है और यह सब कुछ सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हो पाया है।

समुन्नति का तात्पर्य है-सम्यक रूप से उन्नति अर्थात् आर्थिक प्रगति, जन सामान्य की खुशहाली का संरक्षण, मर्यादित उपभोग प्रवृत्ति, इन सभी का समन्वय। आज पश्चिम की प्रगति अर्थ-केन्द्रित है। जन-सामान्य की खुशहाली लगातार सीमित होती जा रही है। समुन्नति को लक्षित करने के लिए शिक्षा और शोध को उपादेय बनाना होगा। जो ज्ञान संपदा विरासत में मिली है उसे परखना और व्यवहार में लाना होगा।

हिंदी अनुसंधान, समुन्नति और सूचना प्रौद्योगिकी के अर्थ विश्लेषण के उपरांत अब हमें यह देखना है कि इनका परस्पर संबंध कैसा है और सूचना प्रौद्योगिकी हिंदी अनुसंधान की दिशा में कहां तक सहायक है और हिंदी शोधार्थियों को कितना लाभान्वित कर सकती है और कर रही है। मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों के अनुसार,

हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर यह समस्याएं सभी।''

शिक्षा औपनिवेशीय कलेवर में यथावत रही है। भारत की संस्कृति के मूल शिक्षा सिद्धांतों और ज्ञान-विज्ञान के विपुल साहित्य को पांडुलिपि संग्रहालय और कतिपय ग्रंथियों तक सीमित रखा गया है। आधुनिक और परंपरागत ज्ञान-विज्ञान को मिल बैठने पर भी परहेज होता रहा है। इन दोनों ज्ञान प्रणालियों की धाराओं को मिलने नहीं दिया गया और आविष्कारक संभावनाओं का उदय ना होने दिया गया। वर्तमान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों और जटिल गुणवत्ता सूचकांकों के कारण हर क्षेत्र में अनुसंधान और शोध पत्रों ने गति पकड़ ली है। प्रत्येक व्यक्ति आज अनुसंधान कर रहा है। एक ओर जहां इस अनिवार्यता ने शोध पत्र में वृद्धि की है वही पिष्ट पेशन असीम गति से बढ़ा है। फिर भी आज इस और अधिक ध्यान दिया जा रहा है। शोध-क्षेत्र में आशातीत वृद्धि ने शोध में अनेकानेक अन्य अनुशासनों और तकनीकी के प्रयोग की संभावनाओं को भी बढ़ा दिया है। अत: ''प्रत्येक शैक्षिक अनुशासनों में निरंतर शोध एवं अनुसंधान से नए-नए ज्ञान के अभ्युदय की होड़ लगी है। इससे शिक्षा के प्रत्येक विषय अपने को विकसित करने के लिए अन्य शैक्षिक अनुशासनों का भी आश्रय ले रहे हैं। स्वाभाविक है कि वर्तमान परिस्थिति में हिंदी भाषा एवं साहित्य भी इसका लाभ उठाकर विविध अनुसंधात्मक परिप्रेक्ष्य में खड़ी चुनौतियों को अन्वेषित करते हुए अपने शोध अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करें।3

इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय समाज में दी जाने वाली उच्च शिक्षा (जिसमें अनुसंधान भी शामिल है) में अनेकानेक खामियां हैं। भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षा की बात करें तो निराशा होती है। उच्च शिक्षा में बेहद निरर्थक और अर्थहीन बातों को शामिल केवल इसलिए किया जा रहा है क्योंकि स्वयं हमारा ज्ञान सुव्यवस्थित तथा पर्याप्त नहीं रहा है। इससे उच्च शिक्षा (अनुसंधान) भी अर्थहीन और दिशाहीन होती चली गई हालांकि आज भी स्थिति अधिक

संतोषजनक नहीं है।

हिंदी में शोध की स्थिति अत्यंत शोचनीय है। उच्च शिक्षा में लोक भाषा हिंदी को भी विषय की भलीभांति समझ के लिए शामिल करना आवश्यक है। विषय की अच्छी समय के परिणामस्वरूप लोकोपयोगी शोध होंगे। शिक्षण गुणवत्ता का कोई संख्यात्मक मूल्यांकन नहीं होता। अब तो डिजिटल पथ ज्ञानार्जन (ऑनलाइन एजुकेशन से शिक्षण गुणवता का माप और भी जटिल हो गया है। कई कॉलेज और प्रकाशकों ने इंटरनेशनल जर्नल प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। इनमें शोध प्रकाशन के लिए फीस भी अच्छी खासी है। शोध में गुणवता और देशीय प्रासंगिक उपादेयता दोनों को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। वस्तुत: शोध प्रोत्साहन के लिए सरकार से उच्च शिक्षण संस्थानों और सरकारी शोध विकास संस्थानों की भरपूर फंडिंग होती है, लेकिन भारत के बाजार में इनसे बने उत्पाद और सेवाएं नगन्य है। आवश्यक है कि शोध प्रकाशन लोकभाषा हिन्दी में भी हो, जिससे ग्रामीण आँचल की, उदीयमान प्रतिभाओं को भी नवाचार के लाभ मिलें, तदनंतर उनकी भागेदारी भी बढ़े और उद्यमिता की नई-नई संभावनाएं सकार हों।

बढ़ रहे इलेक्ट्रॉनिक स्रोतों ने सम्प्रति अनुसंधान के क्षेत्र में अन्तरानुशासनत्मक शोध के वातावरण में विविध नए विषयों की संभावनाओं पर बल दिया है। विषयों का अनूदित रूप हमारे पास उपलब्ध होने के कारण हिन्दी फलक, नए विषय, नए अन्तरानुशासन, नए शिल्प आदि सुलभ हो गए हैं। सूचना क्रांति ने जहां बहुत कुछ संभावनाएं पेश की हैं, वहीं इनके दबाव में जटिल हो रही संवेदना से विषय का सरलीकृत रूप भी असामान्य हो गया है। अत: साहित्य अनुसंधान भी जटिल और चुनौतीपूर्ण हो गया है। इलेक्ट्रॉनिक स्रोतों ने अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधित्सुओं का मार्गदर्शन किया है वहीं उनके लिए भ्रम की स्थिति भी उपस्थित कर दी है। आज सन्दर्भ के लिए ऑनलाइन पुस्तकालय और ऑनलाइन पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध हैं और नवीन संभावनाएं जग रही हैं। इन संभावनाओं ने साहित्य-अनुसंधान के समक्ष नवीन संभावना एवं चुनौतियां भी पैदा कर दी हैं।

लोकोन्मुखी शिक्षा से लोकोन्मुख उपयोगी शोध पर नवाचार (इनोवेशन) की संभावनाओं की परतें खुलती जाएंगी। स्नातकोतर शोध और पी.एच.डी. में प्रकाशित शोध पत्रों में आवश्यक हो कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान से भी साहित्य सर्वेक्षण किया जाए। मानव मशीन संयोग से बनी टेकनलॉजी का मानव पर सामाजिक, मानसिक प्रभाव आदि पर विचार के साथ-साथ प्रकृति पर भी संभावित विचार हो। आज भी देश में हो रहे शोध की न केवल मात्र, बल्कि उसकी गुणवत्ता को लेकर हम अन्य देशों की तुलना में काफी पिछड़े हुए हैं। आधुनिक भारत में शोध की परंपरा औपनिवेशिक काल में स्थापित विश्वविद्यालयों और संस्थानों में शुरू हुई जो कमोबेश अविच्छिन्न रूप से अभी उसी ढर्रे पर चल रही है। कभी-कभी शोध की वरीयताओं को लेकर सोच-विचार जरूर किया गया है और कुछ बदलाव भी आए हैं परंतु शोध की संस्कृति ज्यादातर अध्ययन केंद्रों पर अपनी पुरानी लीक पर ही चलती चली जा रही है।

आज हमें शोध की दुनिया में लकीर का फकीर बनने की न तो आवश्यकता है और ना ही विवशता क्योंकि सूचना के बढ़ते साम्राज्य ने उपयोगी और प्रासंगिक सूचनाओं का पृथक्करण करते हुए इनकी प्रोसेसिंग से नए ज्ञान या तथ्यों का उद्‌घाटित करने वाले अनुसंधान के महत्व को अत्यंत विकसित किया है। इस सम्बन्ध में डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह लिखते हैं अपने शोध को सर्वथा वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक तथा प्रासंगिक और उपयुक्त बनाने के लिए शोध की प्रक्रिया और नवीन विषयों पर विचार करना नितांत आवश्यक है। साहित्यिक विमर्श, प्रवृत्त्यात्मक अध्ययन, शिल्पगत अध्ययन, नयी भाषिक प्रवृत्तियों के अन्वेषण साहित्य के समाजशास्त्रीय, समाजभाषिकी, पाठालोचन, शैली वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन के विविध परिप्रेक्ष्य में नवीन संभावनाओं को अन्वेषित करने की नितांत आवश्यकता है।''4 आज इंटरनेट के प्रयोग से अनुसंधित्सु के समक्ष कुंजीपटल के एक दबाव से सूचनाओं का अपार भण्डार खुलने लगता है और लिंक पर लिंक मिलते चले जाते हैं और आवश्यकतानुसार जानकारी उपलब्ध होती जाती है परन्तु यह जानकारी कितनी उपयोगी और प्रामाणिक है, इस पर प्रश्न चिह्न है।

यह सत्य है कि आज संचार क्रांति के युग में संगणक और इंटरनेट ने नवीन संभावनाओं को जन्म दिया है और आने वाले समय में और भी सुधार उपस्थित होंगे किन्तु वर्तमान समय तक हिन्दी अनुसंधान में अधिक संभावनाएं दृष्टिगोचर नहीं

हो रही हैं और जो कुछ उपलब्ध है वह अनुसंधान के लिए अधिक उपयोगी नहीं है। इंटरनेट पर किसी कवि विशेष की सामान्य जानकारी तो अवश्य मिल जाएगी परन्तु कवि विशेष पर हुए निरंतर और सामायिक कार्य और आलोचनाएं आज भी उपलब्ध नहीं है। रामचरितमानस पर आज तक सबसे ज्यादा शोध कार्य हुए हैं परन्तु ये सभी शोध कार्य अभी भी इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं।

हिंदी अनुसंधान में अभी क्रांति आना बाकी है। हिंदी में कई प्रकार के कुंजीपटल और अनेकानेक हिंदी फोंट्स उपलब्ध होने के कारण भी भ्रांति उत्पन्न होती है। हिंदी शोध के प्रारूप में एकरूपता लाने के लिए और वैश्विक आधार पर हिंदी के शोधों को प्रतिष्ठित करने के लिए शोध लेखन के मानक प्रारूप को निश्चित करना होगा। शोध की गुणवत्ता को सुधारने ओर पुनरावृति से बचने के लिए आवश्यकता है कि हिंदी भाषा और साहित्य के सभा प्रकाशित संदर्भ ग्रंथों की ओर रचनाओं की विशाल सूची बने और अध्ययनकर्ता को आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध हो सके।

कभी–कभी ऐसा होता है जब किसी एक ही समस्या पर विभिन्न प्रयोगों द्वारा विभिन्न परिणाम निकलते हैं। इस परिणामों में अन्तर के कई कारण हो सकते हैं, जैसे प्रयोगकर्ता या अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रयोग को ठीक ढंग से न करना उस पर पूरी तरह से नियंत्रण न कर पाना आदि प्रयोगकर्ता की ये त्रुटियां भी समस्या अभिव्यक्ति का कारण बन जाती है। अनुसंधानकर्ता की जांच में ली जाने वाली समस्या पर विचार करते हुय उसे इस सम्बन्ध में स्वयं से श्रृंखलाबद्ध कुछ प्रश्न पूछने चाहिये। ये प्रश्न उसकी व्यक्तिगत उपयुक्तता व सामाजिक मूल्यों के आधारपर समस्या का मूल्यांकन करने में सहायक होते हैं। अनुसंधान ईमानदारी से की गई एक प्रक्रिया है। इसमें गहनता से अध्ययन किया जाता है और विवेक एवं समझदारी से काम लिया जाता है। चूंकि यह एक लंबी प्रक्रिया है अत: इसमें धैर्य की परम आवश्यकता होती है।5

कोई भी समस्या स्वयं अभिव्यक्त हो उठेगी जब व्यक्ति का ज्ञान किसी जानकारी की तर्कयुक्त ढंग से व्याख्या न कर सके। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति यद्यपि अपने ज्ञान से परिचित होता है तथा साथ ही वह इस सत्य से भी इन्कार नहीं करता है कि उसके ज्ञान में कुछ कमी है जिसके कारण वह किसी घटना की उचित व्याख्या नहीं कर पा रहा है। शोध की गुणवत्ता के लिए शोधार्थी कट, कॉपी, पेस्ट कल्चर से बचें। शोध तकनीक के सही चयन एवं सांख्यिकी टूल्स के सही उपयोग से ही बेहतर शोध परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। शोध में विषय चयन से लेकर, शोध पद्धति, सांख्यिकी टूल्स, शोध तकनीक के विषय में सही जानकारी अति आवश्यक है। गुणवत्तापरक शोध के लिए शोधार्थियों को मेहनत से नाता जोड़ना होगा। टेबल रिसर्च की जगह फील्ड में निकलना होगा। उचित एंव स्टीक निष्कर्षों तक पहुंचने के लिए शोध प्रक्रिया का नियोजन अति आवश्यक है। शुद्ध अभिकल्प एक व्यापक कार्य योजना है, जिसका अंतिम उद्देश्य अनुसंधानकर्ता को शोध प्रश्न का ऐसा उत्तर प्रदान करता है जो यथासंभव वैध, वस्तुनिष्ठ, परिशुद्ध और कम खर्चीला हो। शोध के लिए अति आवश्यक है कि जिस विषय पर कार्य करना है उसे मौलिक रूप प्रदान करना। इस विषय में खुद का पता कैसे चले? विष पसंदगी के समय शोधार्थी को जागरूक रहना है कि कोई विषय के संदर्भ में धार्मिक, सामाजिक तथा राजकीय दृष्टि से विवाद चलता है तो उस विषय से परहेज करना जरूरी है, अन्यथा कार्य में अवरोध उत्पन्न होगा तथा नियतय काल में कार्य सम्पन्न संदेहास्पद होगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नियमों को देखते हुए विषय निर्धारण जरूरी है। शोध विषय अति विस्तृत या अति संक्षिप्त नहीं होना चाहिए। संशोधन कार्य में जिस–जिस सहायक साधनों का उपयोग किया गया है उसका उचित स्थान पर उल्लेख करना जरूरी है।

संशोधित विषय, संदर्भ, पंक्तियां जहां से उद्धृत है वही का विवरण उपदेय है। किसी ओर के विचारों को खुद के नाम न बता कर, जिसकी भी है उसका सही संदर्भ देने में संशोधक तथा संशोधन के हित में है। संशोधन एक प्रकरण से शुरू होकर जहां समाप्त होता है, उसके उचित विवेचक विषय के विवेचन का फल शोधार्थी की दृष्टि से क्या है? उसका स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। उसमें शोधार्थी की इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, विवेचन कौशल्य द्वारा प्रतिपादन योग्यता का संकेत प्राप्त होता है। शोध कार्य का सीमांकन भी जरूरी है, जिसके निश्चित समय मर्यादा का पालन हा सकता है। संशोधन कार्य नियत अवधि में समाप्त करने हेतु सीमांकन जरूरी है। इसके साथ ही संशोधन की भाषा अस्पष्ट, अलंकारिक, पारिभाषिक शब्दों से युक्त नहीं होनी चाहिए। भाषा परिशुद्ध, विषय प्रतिपादन योग्य, सहज और सरल होनी चाहिए। संशोधन में विषय वस्तु को ही समस्या के नाम से जाना जाता है। अत: जिस के चयन में सावधानी सफलता की साक्षी बनती है। हिन्दी की प्रत्येक

रचना, प्रत्येक पुस्तक, प्रत्येक शोध प्रबन्ध कापे इंटरनेट पर डालना होगा ताकि हिन्दी अनुसंधान करने वालों को नवीन क्रांति से फायदा हो सके और पिष्ट-पेषण से मुक्ति मिल सके। आज हम विषय के चुनाव में ही कितना समय बर्बाद कर देते हैं और फिर अपनी सुविधा के लिए ऐसे विषय को चुन लेते हैं जिन पर ढेरों कार्य हो चुके हैं यदि सभी विश्वविद्यलयों में हो रहे हिन्दी अनुसंधानों की सूची और शोध-प्रबन्ध अपलोड कर दिए जाएं तो भ्रांतियां और पुनरावृति पर लगाम संभव है।

संदर्भ :-

1. डॉ॰ अरोड़ा हरीश, शोध: निकष पर, रेखा प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2004, पृष्ठ 11
2. डॉ॰ कुमार देवेंद्र, पत्रकारिता: पहचान और प्रशिक्षण, वागीश प्रकाशन, जालंधर, संस्करण, 2005, पृष्ठ 201-202
3. डॉ॰ सिंह योगेन्द्र प्रताप, साहित्य शोध के विविध परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियां, शोध संचयन (ऑनलाइन अर्द्धवार्षिक पत्रिका) जनवरी 2010
4. वही; पृष्ठ 17
5. शोध के प्रति जागरूकता व लगाम जरूरी - संपादकीय, शोध संचयन, जनवरी - 2014